रिकॉर्ड :– तू प्यार का सागर है..... ॐ पिताश्री 24/6/63

ओम् शांति। बाप बच्चों के सन्मुख है, बच्चे बाप के सन्मुख हैं। यह सन्मुखपणा एक ही बार कल्प–3 के संगमयुग पर ही होता है। बच्चे जानते हैं कि हम आपस में इस समय कल्प पहले मुआफिक ही मिलते हैं, इस नाम–रूप, देश–काल में। हम एक/दो को पहचान जाते हैं। बाप बच्चों को, बच्चे बाप को, बहनें–भाई ब्राह्मण कुल के भी एक/दो को पहचानते हैं। हम कल्प पहले भी आपस में ऐसे मिले थे, बाप–दादा और माँ के सन्मुख। फिर ऐसे कब न कह सकेंगे। भल सतयुग से लेकर देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र कुल में आते हैं; परन्तु ऐसे नहीं कहेंगे कि हम आपस में कल्प पहले मिले थे, फिर मिलेंगे। ऐसे कोई दूसरे वर्ण में जान न सकेंगे। सिर्फ इस समय ब्राह्मण वर्ण में ही जानते हैं। तुम कहेंगे, हम मम्मा–बाबा को पहचानते हैं, बाबा–मम्मा हमको पहचानते हैं। हम एक/दो को भी पहचानते हैं। यह ब्राह्मण कुल भूषण का ऐसे मिलन एक ही बार होता है। तुम जानते हो, हम प्राचीन वा (प्री)तम भाई–बहन, सखे–सखियाँ आपस में हैं। तुम, हम और बाप (प्री)तम है। (प्री)तम का अर्थ भी और कोई नहीं जानते। बाप खुद बैठ समझाते हैं। कहते हैं– मेरा रास्ता सभी भूले हुए हैं। माया की प्रवेशता होने कारण छी–2 बन गए हैं। माया ने पंख तोड़ डाले हैं। आत्मा उड़ती है ना; शरीर तो नहीं उड़ता। आत्मा अपना रास्ता भी भूल गई है, उड़ नहीं सकती। सिर्फ यहाँ ही शरीर छोड़ ढक(धक) दूसरा शरीर जाकर लेती है। बाकी वहाँ परमधाम में अथवा वापिस घर में नहीं जा सकते, जहाँ हम अशरीरी रहें। तब तो कहते हैं– बाबा, क्या हुआ जो हम उड़ न सकते? बाबा, कब से माया प्रवेश होती है? क्या होता है, अब बच्चे जान गए हैं। बाबा है ज्ञान सागर। उनसे कोई थोड़ा भी ज्ञान लेते हैं तो स्वर्ग में जाय सकते हैं। उड़ सकते हैं ना! कहते हैं ना– आत्मा स्वर्गवासी हुई; परन्तु होती नहीं है। कहते हैं, थोड़ा लोटा भी कोई लेवे, ज्ञान प्राप्त करे, तो वो भी स्वर्ग में जाने निमित्त बन जाते हैं। यह बाप बैठ सभी बच्चों को समझाते हैं, स्वर्ग में तो जाना है। यहाँ तो तुम बच्चों को, सागर को पूरा हप करना है; परन्तु कोई थोड़ा भी ले जाते हैं। ऐसे तो नहीं, कोई सभी आवेंगे। कोई सिर्फ अंचली ले जाते हैं। कोई तो अच्छी रीत ज्ञान सागर से खज़ाना लूटते रहते हैं। ज्ञान रत्न लेकर फिर दान करते रहते हैं। दान करने वाले ज़रूर ऊँच पद पावेंगे। बाप कहते हैं– यह बड़ा सुहावना संगम का समय है। आत्माएँ जो पूज्य थीं, वो ही फिर पुजारी बनी हैं– यह अभी हमको ज्ञान मिला है। हम देवता थे, फिर अब ब्राह्मण बने हैं। जब देवताएँ थे तो हम पूज्य थे, वहाँ कोई पूजा नहीं होती थी। खुद ही पूज्य थे, फिर पूज्य से पुजारी बने। अब पूज्य कौन, पुजारी कौन– यह तो बिल्कुल सहज है। हम देवताएँ पूज्य थे, फिर पुजारी बने। अब जो ब्राह्मण बनेंगे, वो ही फिर पूज्य देवता बनेंगे। पुजारी भी हम ही थे, फिर हम ही पूज्य बनते हैं। पूज्य से पुजारी बने, फिर अब ब्राह्मण बने हैं पूज्य देवता बनने लिए। यह वर्ण भी हम समझा सकते हैं। 84 जन्म भी उसमें आ जाते हैं। बरोबर हम 21 जन्म पूज्य थे, फिर पुजारी राजा–राणी तथा प्रजा बने। ऐसे नहीं कि वहाँ पूज्य–पुजारी बने, प्रजा में गए। नहीं। इन राज़ों को अब अपन जानते हैं। समझाया गया है, जो कम पढ़ते हैं, उनको दास–दासी बनना पड़ता है। रॉयल घराणे वाले कोई प्रजा में नहीं जावेंगे, न प्रजा वाले रॉयल घराणे में ही जाते हैं, दास–दासी बन फिर पिछाड़ी में कुछ पद पाते हैं। यह राज़ सभी समझाय जाते हैं। कोई तो अच्छी रीत धारण करते हैं। इसमें मैनर्स, दैवी गुण भी धारण करने होते हैं। आसुरी गुण को निकालना है। यह विकार आते ही तब हैं जब देह–अभिमानी बनते हैं। अब तुमको देही–अभिमानी बनना है। मैं आत्मा हूँ– मुख से कुछ बोलना नहीं है, अन्दर में समझना है। बाप आए हैं हम आत्माओं को ले जाने लिए। बाबा कहते हैं– बच्चे, तुमने 84 जन्मों का पार्ट बजाया है। तुम्हारा अनादि यह पार्ट है। तुम एक्टर्स ही जो पूज्य थे, वो ही फिर पुजारी बने हो। ऐसे नहीं, कोई नया ड्रामा बनता है। यह है अनादि बना–बनाया अविनाशी वर्ल्ड ड्रामा। न कोई मोक्ष

को पाए सकते हैं, न ड्रामा में पार्ट किसका बदल सकता है। हर एक एक्टर (का) अपना पार्ट है। कोई–2 एक्टर्स बहुत अच्छे होते हैं, बहुत आमदनी अच्छी होती है। कोई की तो (बिल्कुल) आमदनी नहीं रहती। जो बहुत अच्छे–2 एक्टर्स होते हैं, उनको देखने लिए कई मनुष्य जाते हैं। भीड़ ... आती है। तुम एक्टर्स को भी देखने लिए भीड़ मच जावेगी। यह बेहद के ड्रामा का राज़ बहुत समझने लिए आवेंगे। कहेंगे– ओ हो! यह तो गुप्त वेश में बेहद ड्रामा के एक्टर्स हैं। जगदम्बा भी गुप्त वेश में है। उनके ऑक्युपेशन का कोई को पता नहीं। वो ही मम्मा है, जि(स)से अविनाशी ज्ञान रत्नों से बादशाही मिलती है। वो ही मम्मा फिर लक्ष्मी बनती है, तो भी उनसे भीख माँगते हैं। कितनी ज़बरदस्त एक्टर है! वो हद के एक्टर्स बहुत कमाते हैं। उनके पास बहुत पैसे रहते हैं। कहाँ वो हद के एक्टर्स, कहाँ यह बेहद के एक्टर्स! इस समय तुम भी एक्टर्स हो। तो उन एक्टर्स का भी अभी नाम हुआ है। आगे एक्टर्स का इतना नाम नहीं था। इतनी पैदाइश नहीं होती थी। अभी तो बहुत पैदाइश है। मनुष्य देखने लिए भी बहुत जाते हैं। विलायत तरफ भी यह एक्टर्स जाते हैं। तुम तो विलायत में जाओ न जाओ; परन्तु तुम्हारा मान बहुत होगा, बहुत नाम निकलेगा जैसा एक्टर होगा। ज्ञान–योगयुक्त है, तो फिर बाप से भी मदद मिलती है। भल प्रजा में जाने वाले हो तो भी बड़े ज़बरदस्त एक्टर्स कहेंगे। तुम्हारे मुख से यह ज्ञान रत्न निकलने चाहिए। रूप–बसंत बनना है ना! आत्मा रूप इन ऑरगन्स से धारण करती है, फिर सुनाती है बसंत बन। तो रूप–बसंत ठहरे ना! तुम हर एक के मुख से रत्न–जवाहर निकलते ... हैं नम्बरवार। थोड़े रत्न होंगे तो दान भी थोड़ा करेंगे। तुम जानते हो, ड्रामा अनुसार यह सब हो रहा है। हम बाप के साथ मोस्ट प्रॉमिनेंट एक्टर्स हैं; परन्तु इनकागनिटो। परमपिता प० भी इस समय ही परमधाम से आते हैं। जादूगरी से इस वैश्यालय को शिवालय बनाते हैं। बाप के साथ तुम बच्चे मददगार हो। तुम कमाल करते हो– पुरानी दुनिया को नया बनाना कम बात नहीं है। पुरानी दुनिया का विनाश, नई की स्थापना सा० भी कराते हैं। जादूगरी भी है और फिर ज्ञान अंजन भी है। ज्ञान अंजन सत्गुरु दिया अज्ञान अंधेरे विनाश। सत्गुरु वो एक है, जो रात से दिन बनाते हैं। गुरु लोग को सत्गुरु नहीं कहेंगे, वो रात से दिन बना ना सके। दिन वैकुण्ठ को कहा जाता है। अभी तुम वैकुण्ठ में जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। रासलीला, बाल लीला आदि सा० भी करते हो। यहाँ बैठे–2 तुमको बाबा वैकुण्ठ का सा० करा लेते हैं। तो जादू हुआ ना! मीरा को भी जादू लगा ना। तुमको भी जादू लगा है, जो ध्यान में जाती हो। सुरक्षा भी है; परन्तु ये कोई कॉमन बात नहीं। इन बातों को समझने वाला समझे। जो समझेंगे सो जीवनमुक्त, नहीं तो विनाश हो जावेंगे। तो अपन को एक्टर्स समझना चाहिए। उन एक्टर्स को कितना नशा रहता है। तुमको है गुप्त नशा। हम अभी मनुष्य से सो देवता बन रहे हैं। मनुष्य से नारायण बनते हैं। हम प्रतिज्ञा करते हैं, हम नारायण को या लक्ष्मी को वरेंगे अवश्य। यदि फेल होंगे तो राम–सीता का कोई कम पद थोड़े हैं; परन्तु लक्ष्य कम पद का नहीं रखा जाता है। जो ऊँच बनते हैं, 16 कला सम्पूर्ण, उनके आगे 14 कला वाले भरी ढाएँगे; इसलिए पुरुषार्थ पूरा करना चाहिए। ऐसे नहीं, सुना और दूसरे कान से निकाल दिया। सतोप्रधान बुद्धि, सतो–रजो–तमो बुद्धि नम्बरवार पुरुषार्थी हैं। इसमें कोई शक नहीं। हर बात में नम्बरवार होते ही हैं। कोई बैरिस्टर तो एक केस का लाख रुपया कमाते हैं, कोई तो सौ भी मुश्किल से कमाते। पढ़ाई पर सारा मदार है। यहाँ भी है– योग और पढ़ाई। मनुष्य से देवता बनना है। यहाँ तो कोई देवता बना ना सके। मनुष्य, मनुष्य को देवता कैसे बनावेंगे! इम्पॉसिबुल है। अवश्य दूसरा होगा। बाप कहते हैं– मैं तुमको सहज राजयोग सिखलाता हूँ। नर से नारायण बनाता हूँ। मनुष्य से देवता करत ना लागे

वार। ये कौन कहते हैं? एक ओंकार..... जो मूत पलीती कपड़ा खुद है वो धोएँगे कैसे? मूत पलीती कपड़ा धोए, इसका भी अर्थ अपन कर सकते हैं अभी। आगे तो सिर्फ तोते मुआफिक गाते थे। अनायास (म)हिमा निकलती रहती थी। अभी (तो) समझते हैं, बाबा ज्ञान का सागर, प्यार का सागर है। हमको भी ऐसा बनकर सभी को सुख देना है। बाप (कहते) हैं– कब भी किसको दुख न देना। अपन को भी दुख न देना। कोई पाप कर्म न करना, नहीं तो धर्मराज पास बहुत सज़ा खानी पड़ती और दूसरे जन्म में भी कर्म कूटने पड़ते हैं। कोई दुख होता, रोग होता, तो कर्म कूटते हैं ना! बाप कहते हैं– तुम हो सैलवेशन आर्मी अथवा लिबरेट करने वाले। तुम बड़े–2 वकील हो। हर एक को कहते हो, हम तुमको जन्म–जन्मांतर के लिए गर्भजेल की सज़ा से छुड़ाते हैं। फिर तुम कब सज़ा न खावेंगे। न बाहर दुख भोगेंगे, जो कर्म कूटने पड़े। रावण रूपी माया से हम हर एक लिबरेट करते हैं। सभी रावण की ज़जीर में फँसे हुए हैं। तो हम कितने ज़बरदस्त बैरिस्टर है– हर एक को 5 विकारों रूपी ज़ंजीर से वा गर्भजेल की सज़ा से बचाते हैं। हम गारंटी करते हैं– 21 जन्म फिर सज़ा न भोगेंगे। बाप ने बच्चों को सा० भी कराया है। अगर यहाँ रहकर कोई पाप करते हैं तो उनकी खाल उतारते हैं। एक तो पहले का ही विकर्म का बोझा है, दूसरा फिर रहकर ऐसी भूलें करते हैं तो बहुत कड़ी सज़ा मिलती है। यहाँ भी कड़ी–2 सज़ाएँ होती है ना! खारे पानी की सज़ा। कोई को तो फाँसी पर चढ़ाए देते। बाप कहते हैं– वो तो हुई उस गवर्मेन्ट की बातें। यह पाण्डव गवर्मेन्ट की सज़ा फिर और है। गर्भजेल में भी सज़ा भोगाते हैं। बीमारी आदि होती है, वो भी कर्म है ना! अभी तुम निमित्त बने हो, खुद (को) लिबरेट करना और औरों को कराना है। जो खुद ही पाप करते होंगे रावण के डायरैक्शन से, वो और को लिबरेट कर न सके। वहाँ है रावण की मत, यहाँ है एक श्रीमत। बाप कहते हैं– मैं आया हूँ तुमको श्रीमत देने, फिर भी तुम मत पर न चलेंगे तो बहुत सज़ा खावेंगे, पद भी भ्रष्ट होगा। हम सोनार, बैरिस्टर, धोबी, सब कुछ है(हूँ)। मूत पलीती कपड़ धोने वाले हैं, ज्ञान की वर्षा बरसाए पावन बनाते हैं। तो ऐसा नशा भी रखना चाहिए। तुम कम एक्टर्स नहीं हो। तुमको नशा रहना चाहिए, हम बेहद के एक्टर्स हैं, वो हद के एक्टर्स हैं। नशा बहुत अच्छा चाहिए। जो जैसा एक्टर होगा उनको ऐसा नशा होगा। कहते हैं, बहुत सोना दान किया है तब गला बहुत अच्छा गोल्डन एज्ड मिला है। कितना फर्स्ट क्लास गाते हैं! सभी उन पर अकन–छकन हो जाते हैं। गायन सुनेंगे और भागेंगे। तुम्हारा फिर गायन है ज्ञान का। यह पढ़ाई है। पढ़ना है और पढ़ाना है। जो जैसा एक्टर है, उनको नशा रहना चाहिए। बाबा–मम्मा को नशा नहीं होगा! नामी–ग्रामी एक्टर्स होते हैं ना! नम्बरवन एक्टर को फिर इनाम भी ऐसा अच्छा मिलता है। तुमको भी इनाम मिलेगा। जो बड़े तीखे होंगे वो विजयमाला में पिरोए जावेंगे, 21 जन्म राज्य करेंगे। यह कम इनाम थोड़े ही है! तुम्हारे भेंट में वो एक्टर्स तो वर्थ नॉट ए पैनी हैं। तुम्हारी बातें सुने तो वो खुद भी कहें– बरोबर हम तो वर्थ नॉट ए पैनी है। फखुर रहना चाहिए; परन्तु गुप्त। ऐसे नहीं, उल्टा–सुल्टा मुख से कुछ बोल दे। बड़ी गंभीरता चाहिए और बहुत मीठा बनना है। पहले नम्बर की बात है– मीठा बनना। देवताएँ मीठे हैं तो कितना खैंचते हैं। क्रोध तो ज़रा भी न होना चाहिए। कोई को हम हाथ–पाँव चला नहीं सकते। पूछते हैं, छोटे–2 बच्चे तंग करते हैं, मारना पड़ता है। कोशिश करनी चाहिए समझाने की, रस्सी बाँध लो। लाचारी हालत में उनके कल्याण अर्थ हल्की चमाट मारनी पड़े, वो कोई पाप नहीं है। फिर भी बच्चे हैं ना! बच्चे को ऐसा संभाला जाता है; जैसे दाढ़ी को। वार मूँछ का वार कहा जाता है। तो उनको संभालना पड़ता है। हम भी 5 विकारों में बहुत चंचल हैं। बाबा सुधारने आए हैं। बाप कहते हैं– इस पढ़ाई में मैनर्स बड़े अच्छे चाहिए। सर्वगुण सम्पन्न.... बनना है। देह–अभिमान है पहले नम्बर का विकार। कहेंगे, दुनिया कैसे चलेगी? बोलो, भगवान कहते हैं– पवित्र बनो, जो पवित्र बनेंगे वो पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। अभी तो बिच्छू–टिंडन पैदा करते आए हो। अब फिर पवित्र बनना है। असुर विख से पैदा होते हैं। देवताएँ अमृत से पैसा(पैदा) होते हैं। उनको कहते हैं–

वाइसलेस वर्ल्ड। मान तो है ना! सन्यासी भी पवित्र रहते हैं। फिर उनको क्यों नहीं कहते कि दुनिया कैसे चलेगी। बड़ा युक्ति से समझाना पड़ता है। नम्बरवार एक्टर्स हैं ना। रजिस्टर भी रहता है ना बाप पास। बड़े बाबा के रजिस्टर पर भी रहते हैं। ऐसे नहीं, मम्मा–बाबा, अनन्य बच्चे नहीं जानते होंगे। ऊँच ते ऊँच है बाबा। फिर जगदम्बा–जगतपिता। तो ज़रूर वो भी जानते होंगे। ऐसे नहीं, बच्चे उनसे जानते होंगे। तो बाप कहते हैं– सागर को पूरा हप करो। पूरा हप तब करेंगे जब रिफ्रेश हो जाए बरसेंगे। पूरा बादल बनना है। कोई–2 बादल बोडंबोड कर देते हैं। धीरे–2 तुम्हारे भाषणों से भी बहुत समझते जावेंगे। धीरे–2 यह पार्ट खुलता जावेगा। पिछाड़ी में कहते हैं ना– अहो प्रभु तेरी लीला..... यह शिवशक्ति पांडव सेना है। इनसे अपने भारत को स्वर्ग बनाया है। पिछाड़ी में गायन करेंगे। धीरे वृद्धि होगी। जो दिन पास होता है वो एक्युरेट, तो भी अपन को पुरुषार्थ करना है, सुस्त ना बनना है। जो नसीब में होगा– ऐसा समझने वाले को थर्ड ... क्लास कहा जाता है। फर्स्ट क्लास तो खूब पुरुषार्थ कर आप समान बनाते रहेंगे, सबूत देते रहेंगे। वो लिखेंगे– हमको फलाने ने बहुत अच्छा ज्ञान दिया। जिनकी सर्विस करेंगे, वो बाप पास दौड़ेंगे। भल कोई कितना भी प्रभावित हो गया। अच्छा, फिर क्या हुआ! तकदीर में वर्सा ना है तो वहाँ की वहाँ रही। जितना प्रभाव तुम्हारा बढ़ता रहेगा, तो एक/दो को देख आते .... रहेंगे। साधु–संत आदि भी थोड़े ही आवेंगे। गरीब निवाज़ बाप है ना! फिर गरीबों अख़बारों द्वारा ज्ञान सुनेंगे। बिल्कुल साधारण बच्चियाँ बड़े–2 सन्यासियों आदि को ज्ञान देगी। यह वण्डर है, जो हम फिर इस नाम–रूप, देश–काल में अब मिलते हैं! फिर कब ऐसे नहीं कहेंगे कि हम आगे आपस में मिलेंगे। यह बहुत वण्डरफुल बातें हैं! हम बेहद के एक्टर्स हैं। फिर से आकर मिले हैं। अनेक बार मिले हैं। ..... माँ–बाप हैं, यह बहुत वण्डरफुल संगमयुग का पार्ट है। इन पार्टधारियों की बहुत महिमा है। यह रूहानी सेवा करते हैं। सन्यासी लोग जिस्मानी सेवा करते हैं। कहते हैं, गंगा में जाकर स्नान कर शरीर को साफ करो। हम कहते, आत्मा को प्योर बनाना है। मूत पलीती आत्मा हुई है। आत्मा के पर टूट जाते हैं, गंदे बन जाते हैं। जड़जड़ीभूत तो होना ही है। इसमें भी सबसे जास्ती पर टूटे हुए हैं जो श्री–श्री 108 जगत गुरु अपन को कहलाने वाले हैं; इसलिए बाप कहते हैं– इनको मारो, भगाओ। बा(बा) कुटुम्ब परिवार लिए कहते हैं– नष्टोमोहा बनो। उनको गोली मारो; क्योंकि उन्होंने रसातल डाला है। इन गुरुओं ने तो तमोप्रधान बनाया है। रास्ता बतलाने बदली और ही उल्टा रास्ता बताय, जंगल में ले जाते हैं। इन गुरुओं कारण ही ये जंगल बना है। सत्गुरु आते, तब गार्डन बन जाता है। बच्चों को बहुत–2 मीठा बनना है। आपस में खीर खण्ड हो चलना है। लून–पानी हो चलने वाले लून–पानी होकर मरते हैं। मनुष्यों का मरना है कुत्ते–बिल्ले मुआफिक। तुम जाकर देवता बनते हो। वो बिच्छू–टिंडन बनते हैं। कुत्ते–बिल्ले कोई बनते नहीं हैं; परन्तु जैसे पाप किए हैं ऐसे फिर सज़ाएँ मिलती हैं। अगर पाप करेंगे तो कुत्ते–बिल्ले जैसे पुरानी शरीर, जिसमें पाप किया है, वो सा० कराते हैं। वो कुत्ते–बिल्ले–सर्प, वैसे जन्म बाबा दिखाते हैं। बहुत सज़ाएँ खिलाते हैं। सा० कराते हैं– तुमने ये–2 पाप किए हैं, अब खाओ सज़ा। तुम ट्रिबुनल में बैठ देखते हो। बाबा दिखलावेंगे– देखो, इसने मेरे होते ये–2 पाप किया है; इसलिए सज़ा देता हूँ। एक तो पहले का दिखावेंगे– देखो, तुमने कितने पाप किए हैं! एक तो पहले का पापों का बोझा है, फिर यहाँ आकर पाप करे, फिर 100 गुणा दण्ड पड़ता है। इसलिए बहुत खबरदारी चाहिए। बाप का नाम निकालना है। सत्गुरु का निंदक ठौर ना पाए। अच्छा, गीत सुनाओ। कितना मीठा है बाबा तो फिर बच्चे भी इतना मीठा बनना चाहिए। तो बाप भी खुश होंगे। फर्स्ट क्लास इनाम तो ऑटोमैटिकली मिलना ही है। अच्छा, मीठे–2 माता–पिता(शिवबाबा) फिर मीठे–2 बाबा–मम्मा का सिकीलधे बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ